तित्थयर

जैन भवन

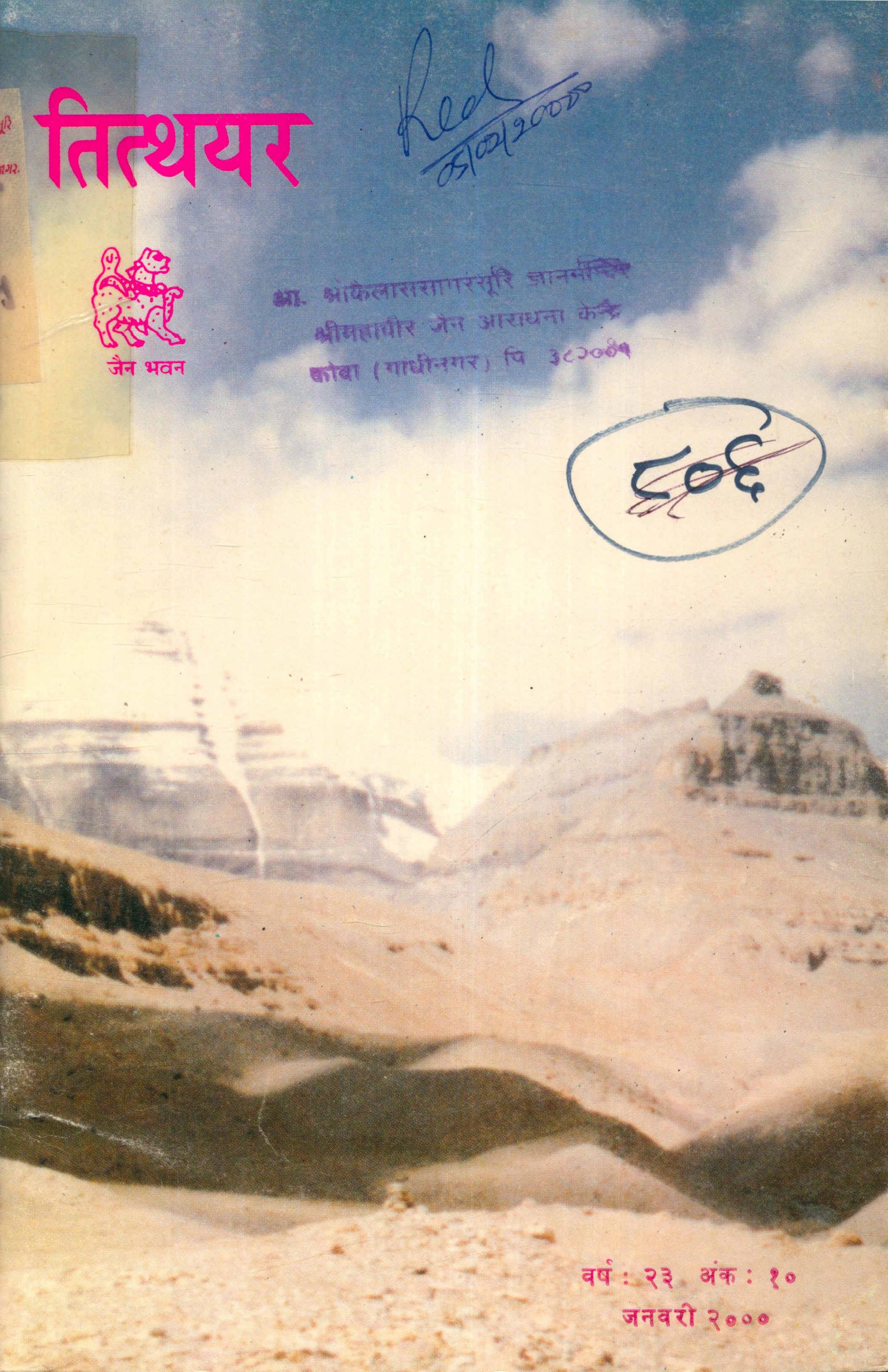

आ. श्रीकैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
श्रीमहावीर जैन आराधना केन्द्र
कोबा (गांधीनगर) पि ३८२००९

वर्ष : २३ अंक : १०
जनवरी २०००

ज्ञानी होने का सार यह है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph: 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

॥ जैन भवन ॥

कलकत्ता

वर्ष - २४ अंक - ९, जनवरी २०००

संपादन

लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : **Tithayar,** P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें -
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three year : Rs. 160.00, US $ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007 Phone: 238 2655 and Printed by her
at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Calcutta-700 006 Phone: 241 1006

अनुक्रमणिका

क्र. सं. लेख		लेखक		पृ. सं.
धातुमय जैन प्रतिमाएँ	-	श्री भंवरलाल नाहटा	-	९८
दशधर्मामृत बिन्दु	-	-	-	१०३
रुद्रपल्लीय गच्छ के इतिहास पर संक्षिप्त प्रकाश	-	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	-	१०७
हिंसा की मानसिकता इस सदी की - सबसे बड़ी चुनौती है।		-	-	१०९
समाचारों की श्रंखला में	-	-	-	११२
मलयासुन्दरी चरित्र	-	-	-	११६
संकलन	-	-	-	१२०

आवरण चित्र–**श्री अष्टापद (कैलाश)**

Composed by :

Anupriya Printers, 6A, Baroda Thakur Lane, Calcutta-700 007, Ph. 232 6083

वही ऋषि है, वही मुनि है, वही संयत है, और वही भिक्षुक है
जो शुद्ध ब्रह्मचर्य का पालन करता है।

धर्म मेरा जलाशय है, ब्रह्मचर्य शान्ति तीर्थ है,
और कलुषभाव रहित आत्मा प्रसन्न लेश्या है, जो मेरा निर्मल घाट है,
जहाँ पर आत्मा स्नान कर कर्म रज से मुक्त होती है।

धातुमय जैन प्रतिमाएं

श्री भंवरलाल नाहटा

पुर्वानुवृत्ति

नवग्रह और दशदिग्पाल पट्ट - सिद्ध चक्र विधान आदि में मंडल पूजादि के लिए ताम्र के नवग्रह और दश दिग्पाल के बड़े - बड़े पट्ट बनते हैं जिनमें उनके नमस्कार पूर्वक नाम या प्रतीक खुदे रहते हैं, कई मंदिरों में ऐसे पट्ट मिलते हैं।

घण्टा कर्ण यंत्र पट्ट - ताम्रपत्र पर घण्टाकर्ण पूजा के यंत्र और मंत्राक्षरादि वाले पट्ट भी पाये जाते हैं । हमारे कलाभवन में ऐसा एक ताम्रपट्ट संगृहीत है।

गणधर प्रतिमा - कलकत्ता के मंदिर में १६वीं शताब्दी की धातुमय दो गौतम स्वामी जी की प्रतिमाएँ है। पुंडरीक स्वामी की प्रतिमा गत शताब्दी की बनी हुई है यह कलकत्ते में ही बनवाकर प्रतिष्ठित करवाई थी व उसी समय दादा साहब के चरण भी कमलासन पर बनवाकर राजलदेसर मंदिर में भेजे गए थे।

नवपद सिद्ध चक्र यंत्र - जैन समाज में चैत्र आसोज में आयंबिल तप पूर्वक नवपद आराधना ओली का पर्याप्त प्रचार है। मंदिरों में नवपद मंडल की रचना होकर वृहद् पूजा विधि विधान पूर्वक भनाई जाती है। नित्य स्नान पूजा में सिद्धचक्र यंत्र रखे जाते हैं। सिद्ध चक्र यंत्र धातुमय बहुत बड़े - बड़े पाये जाते हैं कलकत्ता मंदिर में एक साइज्ज का सिद्ध चक्र पट है। नवपद यंत्र भी विविध प्रकार के पाये जाते है दिगम्बर परम्परा में इसे नवदेवता भी कहते है।

नव देवता - जिन कंतथी के मंदिर में एक यंत्र चौर दितल पाद

पीठ स्थित कमलासन पर मध्य में न्हसिंह और उभय पक्ष में बने सिंहों पर चक्र में सुंदर यंत्र अष्ट दल के अंदर बना हुआ है। बीच में अर्हत ऊपर सिद्ध फिर आचार्य उपाध्याय साधु के अतिरिक्त दर्शन ज्ञान चारित्र तप के प्रतीक स्वरूप जिनालय, ठवणी पर शास्त्र, धर्मचक्र और तपस्वी मुनि के चित्र उत्कीर्णित है। अर्हत भगवान के उभय पक्ष में चामर रखे हुए है।

सिद्ध चक्र यंत्र - श्वेताम्बर समाज में चांदी, कांस्य और पित्तलादि धातुओं के नवपद यंत्र प्रचुर परिमाण में उपलब्ध है जिनमें कईयों में केवल नाम और कुछ में प्रतिमाएँ पायी जाती है। पाषाण पट्टो की भांति धातु यंत्रो पर भी इस विधि का वैविध्य प्राप्त होता है। ढले हुए धातुमय नवपद यंत्र अजीमगंज के दूगड़ परिवार द्वारा बहुत बड़े परिमाण में सौ वर्ष पूर्व बनवाए गये थे जिनमें अक्षर खुदे हुए नही पर ऊपर उठे हुए हैं।

दिल्ली के नौघरा मंदिर में आधुनिक धातु के डबल अष्ट दल वाले सिद्ध चक्र यंत्र है जिसके मध्य कमल दल पर चौमुख जिन प्रतिमाएँ विराजमान है।

चतुर्मुख प्रासाद - मुनिश्री पूण्यविजयजी के संग्रह में धातु का अत्यन्त सुंदर परिकर है जो सं. १६१६ का है इसकी कलापूर्ण अभिव्यक्ति प्रशंसनीय है पृष्ठ में विस्तृत अभिलेख है जिसमें पूर्णिमा पक्ष के विद्याप्रभ सूरि द्वारा प्रतिष्ठा कराने व पाटण के ढंढ़ेर पाडे के श्रीमाल ज्ञातीय श्रावक परिवार के पद्मप्रभ बिंब निर्माण का उल्लेख है, मूल प्रतिमा अब नही है।

एक धातुमय छोटा सा जिनालय है जो चारो और खुला है इसमें चतुर्मुख प्रतिमाएँ विराजमान रही होगी। इस देहरा सर का शिखर अत्यन्त कलापूर्ण है सं. १४६२ में इस चतुमुर्ख प्रासाद सा. धर्मा द्वारा स्वर्ण - रौप्या अलंकृत कराने का और संघ द्वारा निर्माण कराने का उल्लेख है। यह भी मुनि पुण्यविजय जी के संग्रह से है।

नंदीश्वर द्वीप - कोल्हापुर के मंदिर में एक नंदीश्वर बिंबस्थापना धातुमय है जिसमें चौरस चतुर्मुख प्रथम तल पर द्वितीय तल पर १६ तृतीय तल पर १२ और चतुर्थ तल पर चार जिन बिम्ब है ऊपर शिखर कलश युक्त है प्रतिमाएँ पद्मासन में विराजित है।

सहस्त्र कूट जिनालय - पाटण नगर में कांस्य का सहस्त्रकूट जिनालय अत्यन्त सुंदर और कलापूर्ण है। यह सर्वतोभद्र की भाँति चतुर्मख और पर्याप्त ऊँचा है नीचे १२ पर्षदा और सीढ़ीयां बनी है ऊपर की तीन मंजिल में चतुदिग् १००८ प्रतिमाएँ है चारो कोनो में चामर धारी और मकर मुख आदि अलंकरण है ऊपर कलश लगा हुआ है।

नरवर का सहस्त्र कूट बिम्ब इस समय झांसी के जिनालय में है। यह धातुमय ढला हुआ है ४ या ५ फूट ऊँचा ९ भागों में विभाजित खण्डो को ज़ोड़कर बनाया गया है मध्य स्थित प्रतिमा ८ इंच की है अवशिष्टी या १ इंच की है समस्त प्रतिमाएँ १००२ और सं १५१५ शक १५०९ (२) महारक धर्मभूषण के उपदेश से निट्टार्मित है जिनालय के उपरी भाग में पीतल का सुंदर कलश है।

समवशरण - सूरत के जैन मंदिर में एक धातुमय समवशरण अत्यन्त सुंदर कलापूर्ण और दर्शणीय है इस विशाल समवशरण के नीचे चौरस कलापूर्ण आसन पर वृत्ताकार तीन गढ़ और बारह पर्षदा वाला बनाया है यह सन् १०६५ का बना हुआ है इसके प्रतोलीद्वार, तोरण और विशिष्ट प्रकार का शिखर है।

चौमुखजी - सूरत के दिगम्बर जिनालय में एक कांस्य का चतुर्मुख जिनालय भी धातु प्रतिमाओं की विधाओं में अपना वैशिष्ट्य रखता है। इसमें चारों ओर तेरह प्रतिमाएं जिसमें एक खड्गासन और १२ पद्मासन की प्रथम तल में करके ५२ हुई। द्वितीय तल में गोलह और तृतीय तल में चौमुख इस प्रकार ७२ प्रतिमाएँ कलापूर्ण तोरण युक्त है।

पंचमेरू - यह भी सूरत के दिगम्बर जैन मंदिर में पांचो द्वीपों के पंच मेरू के प्रतीक रूप पांच तलों में अत्यन्त सुंदर कलामय अभिव्यक्ति वाला बेजोड़ बना हुआ है।

ताम्रशासन - तीर्थों मंदिरों आदि के लिए राज्य की ओर से व्यक्ति की ओर से जो भूमिदान आदि किए जाते थे उनके अनेक ताम्रशासन संस्कृत, प्राकृत, राजस्थानी से लिखे हुए उपलब्ध हैं। बंगाल के ब्राह्मण गुहनंदि द्वारा पहाड़ युक्त जैन मंदिर मठ को दिया गया ताम्रशासन पॉचवी शताब्दी का है विक्कमपुर का एक ताम्रशासन जेसलमेर में देखा था।

बीकानेर का ज्ञान भंडार में नाल्दादाजी के मंदिर की पूजा के हेतु प्राप्त राजकीय ताम्र शासन है।

चांदी का समवशरण - बड़ौदा के नरसिंहजी की पोल में स्थित दादा पार्श्वनाथ जिनालय में एक चांदी का विशाल समवशरण है।

कलकत्ता के पंचायती मंदिर के जो विश्वविश्रुत कार्तिक महोत्सवजी की सवारी में धर्मनाथ स्वामी का जो चांदी का समवशरण निकाला जाता है वह लगभग हेमल्टन कंपनी ने बनाया था यह सोना चांदी और मणियों से सुशोभित मखमल और जरी के अलंकरण युक्त अद्‌भुत कला कृतिमय है। इसके अतिरिक्त अन्य छोटे समवशरण, नौबतखाना, षटलेश्या वृक्ष आदि अनेक कलामय वस्तुएँ हैं। फूलघरा और पालने ध्वजाएं त्रिगड एवं सिंहासन चांदी की सामग्री प्रचुर परिमाण से प्राप्त है। समवशरण बीकानेर में है। भारत के अनेक जैन मंदिरो में समवशरण, कल्पवृक्ष, चाँदी के रथ त्रिगड़ा सिंहासन देवालय आदि प्रचुर परिमाण में पाये जाते हैं। चतुर्दश महास्वपन की जोड़ियाँ हजारों की संख्या में जैनाश्रित शिल्प की अनोखी देन है।

रजतमय जिन बिम्ब - चाँदी की जिन प्रतिमाएं अनेक स्थानों में पायी जाती है। कलकत्ता के बड़े मंदिर की आदिनाथ प्रतिमा लगभग ११०० भरी की है और मकसूदा बाद के दूगड़ परिवार द्वारा निर्मापित अनेक प्रतिमाओं में से एक है। दिल्ली नौधरा मंदिर में इनके द्वारा सं. १९२० में निर्मित रजतमय पंचतीर्थी है। जीयागंज में भी कई रजतमय जिन प्रतिमाएं है। पाँच सौ वर्ष पंचतीर्थी का उल्लेख आगे किया जा चुका है। नाकोड़ा की मूल नायक प्रतिमा का विशाल परिकर भी रजतमय कलापूर्ण है। मंदिरों की वेदियां, सिंहासन दरवाजे और द्वारशाख तोरण, वंदरवाल आदि अष्ट मंगल, चतुदर्श स्वप्नादि भाव युक्त अनेक मंदिरों में संप्रदा है।

उपसंहार

इस प्रकार धातु प्रतिमाओं के विराट विहंगावलोकन से प्रमाणित है कि प्रतिमादि के निर्माण में धातु का प्रयोग अति प्राचीन काल से होता आया है। मथुरा का देव निर्मित वोद्व स्तूप भी स्वर्ण रत्नमय धातू निर्मित

था। घंघाणी में निकली हुई सम्प्रति व चन्द्रगुप्त कालीन प्रतिमाएं बंबई म्यूजियम की कांस्य प्रतिमा, आकोटा की जीवित स्वामी आदि की प्रतिमाए, वल्लभी, महुड़ी, वसन्तगढ़ आदि की गुप्तकालीन शिल्प परम्परा युक्त प्रतिमाएं, बंगाल, उड़ीसा और बिहार से प्राप्त प्रतिमाओं में कुषाण, गुप्त पाल एंव मध्य कालीन शिल्पमय पंचतीर्थियां, चौवीसी त्रितीर्थी सपरिकर आदि कला का विकास उसमें विभिन्न देवी देवता, भक्तगणादि का प्रवेश अपने आप में एक विशिष्ट अध्ययन की सामग्री है। विशाल से विशाल एवं लघु से लघुमय प्रतिमाएं तथा समवशरण, सहस्त्रकूट, मेरूगिरि आदि शिल्प व यंत्र पट्टादि विद्याएं मथुरा के आयाग पट्ट की परम्परा को उजागर करने में सक्षम है। शिल्पशास्त्र वास्तुविद्या विषयक ग्रंथों से इस विषय में अध्ययह प्रस्तुत करना एक स्वतंत्र शोध का विषय है। इससे प्राचीन भारत के सांस्कृतिक व धार्मिक पूजा - उपासना के अध्याय पर गंभीर और मनोरंजन प्रकाश पड़ सकता है। यहाँ कुछ थोड़ी सी यथाज्ञात सामग्री परसंक्षिप्त प्रकाश डाला गया है, आशा है विद्वान लोग इस उपयोगी विषय शोध कार्य में सविशेष प्रवृत्त होंगे।

---0---

दशधर्मामृत बिन्दु

धर्म शब्द व्याकरण की दृष्टि से **धृग्** धारणे धातु के आगे मन प्रत्यय लगाने से बनता है, धर्म शब्द का धातुगत अर्थ धारण है, निरूक्त शब्द नियम से लिया है, इन दोनों के संयोग से धर्म का वास्तविक अर्थ **'धारणात् इति धर्मः'** अर्थात् जिसे धारण किया जाये वही धर्म है जैसे जिन शासन में **'वत्थु सहावो धम्मो'** कहा गया है अर्थात् वस्तु का स्वभाव ही धर्म है, धर्म विश्व का धारक है वह सभी प्रज्ञाओं का धारण तथा रक्षण करता है और धारण करने के कारण ही इसे धर्म कहा जाता है। मनीषियों ने धर्म को एक और अनेक करके उसके भिन्न भिन्न स्वरूप बताये हैं। आचार्य कुन्दकुन्द ने प्रवचन सार में **'चारितं खलु धम्मो'** दया का विशुद्ध परिणाम धर्म कहा है। सर्वार्थ सिद्धि में आचार्य पूज्यपाद ने **'इष्टस्थाने धत्ते स धर्मः'** जो इष्ट स्थान को देता है, उसे धर्म कहा है। राजवार्तिक में अकलंक आचार्य ने **'नरेन्द्र मुनीन्द्रादिरूपे इष्ट स्थाने धत्ते स धर्मः'** जो नरेन्द्र मुनीन्द्रादि को इष्ट स्थान में धारण करता है, वह धर्म है। कणाद ने वैशेषिक सूत्र में **यतोऽभ्युदयानिश्रेयस सिद्धिः सधर्मः** कहा है। आचार्य कार्तिकेय ने **'वत्थुसहावो धम्मो वस्तु' स्वरूप** को धर्म कहा है। **'उत्तम क्षमा - मार्दवार्जवशौचसत्यसंयम तपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मामचर्याणि दश लाक्षणिको धर्मः'** उत्तम क्षमादि धर्म के दशलक्षण बताये है।

महाभारत में धर्म का लक्षण बताया गया है कि **धारणात् धर्मम् इत्याहुः**। धर्म धारयते प्रज्ञा। **चत् इयादारण संयुक्त। स धर्म इति निश्चयः**। धारण करने से लोग इसे धर्म कहते हैं जीवन के सभी मूल्य धर्म पर आधारित हैं। धर्म रहित कोई मूल्य नहीं हो सकता, जो धर्म रहित है वह अधर्म है, धर्म एक शाश्वत् सत्य है जिसका प्रवाह युगों से बहता चला आ रहा है। युग की परिस्थितियों के कारण धर्म के बाह्म स्वरूप तथा प्रतीकों में भले ही परिवर्तन आ जाये परन्तु आन्तरिक तत्त्व अक्षुणय रहता है। धर्म मनुष्य के अन्दर की एक ऐसी प्रेरणा, भावना, प्रवृत्ति एवं विधि व्यवस्था

है जो मानव के सम्पूर्ण जीवन को उन्नत करती है। धर्म सृष्टि का प्राण तत्त्व है, धर्म के अभाव में सृष्टि की पहचान हो ही नहीं सकती, धर्म प्राणीमात्र के कल्याण की कामना करता है, धर्म का कहना है। **"सर्वे भवन्तु सुखिनः। सर्वे सन्तु निरामया"**

जीवन के सभी कार्य धर्म के आधार पर ही व्यवस्थित होते हैं। आचार्यों ने धर्म को उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, तप, त्याग, आकिंचन एवं ब्रह्मचर्य के भेद से दस प्रकार भी कहे गये हैं। उन भेदों को यहाँ पर संक्षिप्त रूप से दर्शाया जा रहा है:-

१. **उत्तम क्षमा धर्म** : क्षमा शब्द क्षमुष् धातु से अङ एवं टाप् प्रत्यय लगाकर निष्पन्न हुआ है। इसका अर्थ - धैर्य, सहिष्णुता, माफी इत्यादि है। **क्षमा शत्रै चा मित्रेच यतीनामेव भूषणम्** (हितो०) शत्रु एवं मित्र दोनों को क्षमा करना यतियों का भूषण है। क्षमा वीरस्य भूषणम् प्रत्येक प्राणी पर क्षमा भाव धारण करना वीरों का भूषण है। हमारे जीवन में अवज्ञा, ताड़न, शरीर छेदन आदि क्रोध के असाध्य निमित्त मिलने पर भी कालुष्य नहीं होना उत्तम क्षमा है।

२. **उत्तम मार्दव धर्म** : जो मनस्वी पुरूष, कुल, रूप, जाति, बुद्धि, तप, शास्त्र और शीलादि के विषय में थोड़ा सा भी घमण्ड नहीं करता है, उसे ही उत्तम मार्दव धर्म होता है। धर्मराधना के दस भेदों के अन्तर्गत उत्तम मार्दव धर्म का दूसरा स्थान है। **मृदोमविः कर्म वा मार्दवं इति निरुक्ते** मानसिक कोमलता का नाम मार्दव है चित्त में कोमलता और व्यवहार में नम्रता होना मार्दव धर्म है। **मदोर्भावो मार्दवम्** मृदु का भाव मार्दव है। मार्दव का अर्थ है जाति आदि मदों के आवेशवश होने वाले अभिमान का अभाव।

३. **उत्तम आर्जव धर्म** : जो श्रमण मुनि कुटिल भाव को छोड़कर निर्मल हृदय से आचरण का पालन करता है, उसको नियम से दसधर्मो में तृतीय आर्जव धर्म प्राप्त होता है। आर्जव शब्द की उत्पत्ति **ऋजु शब्द** से अण् प्रत्यय लगकर हुई है। आर्जव का अर्थ है - सरलता, स्पष्टवादिता, ईमानदारी, निष्कपटता, उदार हृदयी होना। जो विचार हृदय में रहता है वही वचन में रहता है तथा वही बाहर फलता है अर्थात् शरीर से भी तदनुसार कार्य किया जाता है, यह आर्जव धर्म है। आर्जव धर्म परमात्व स्वरूप है।

४. **उत्तम शौच धर्म** : जो परम मुनि इच्छाओं को रोककर और वैराग्य के विचारों से युक्त होकर आचरण करता है, उसका शौच धर्म होता है। शौच धर्म की निष्पत्ति **शुचेर्भावः शौचम्** अर्थ में शुचि शब्द से अण् प्रत्यय लगने से हुई है। इसका अर्थ पवित्रतर, स्वच्छता, शुद्ध होना, स्वच्छ होना, निर्मल होना, निर्लोभ होना इत्यादि है। नारायण श्रीकृष्ण जी, पाण्डवों को शुचिता की शिक्षा देते हुए कहते हैं कि हे पाण्डवों! संयमरूपी जल से परिपूर्ण यह आत्मा नदी है, सत्य इसका प्रवाह है, शील इसका तट है और दया इसकी लहरें है। इसी में स्नान करने से अन्तरात्मा की शुचिता होती है। अन्तरात्मा की शुचिता ही उत्तम शौच धर्म है।

५. **उत्तम सत्य धर्म** : सत्य धर्म की उत्पत्ति सत् धातु से यत् प्रत्यय लगने से हुई इससे अनेक अर्थ प्रचलित हैं सच्चा, वास्तविक, असली, ईमानदार, निष्ठा, निष्कपट व्यवहार, सत्य बोलना। **सता साधूनां हितभाषणं सत्यम्** (भ. आ.) मुनि और उनके भक्त श्रावक के साथ हितकर वचन बोलना सत्य धर्म है। धर्म की वृद्धि के लिये धर्म सहित बोलने को सत्य कहा है। **सत्सु प्रशस्तेषु जनेषु साधुवचनं सत्यमित्युच्यते** (सि. सि.) अच्छे पुरुषों के साथ साधु वचन बोलना सत्य है। सत्य अन्तरात्मा की शुद्धि की वाणी है सत्य ही उभय लोक में सुख प्रदान करने वाला है इसलिये सभी को सत्यमार्ग पर चलना चाहिये।

६. **उत्तम संयम धर्म** : संयम शब्द की निष्पत्ति सम् उपसर्ग यम् धातु से अप् प्रत्यय लगने से हुई है। इसके अनेक अर्थ होते है - प्रतिबन्ध, रोकथाम, नियन्त्रण और मन की एकाग्रता इत्यादि। संयम के दो भेद है - इन्द्रिय संयम, प्राणी संयम। स्पर्शनादि पाँच इन्द्रियों और मन को विषयों में प्रवृत्ति होने से रोकना इन्द्रिय संयम है। पृथ्वी, अग्नि, जल वायु, वनस्पति और त्रस इन छः काय के जीवों की रक्षा करना प्राणी संयम है। संयम अनुकम्पा करने से होता है। संयम परमार्थ की बार - बार भावना करने से होता है। संयम सम्यग्दर्शन के मार्ग को पुष्ट करता है, संयम एकमात्र मोक्ष का मार्ग है। यही उत्तम संयम धर्म है।

७. **उत्तम तप धर्म** : तप शब्द की उत्पत्ति तप् धातु से अच् प्रत्यय लगने से हुई है। इसका अर्थ - कर्म शत्रुओं को नाश करना, तपाना, कर्मों को तपाकर समाप्त करना। तप एक जल प्रपात है जो कि समस्त कलंको को धो देता है और आत्मा को सभी कर्मों से विशुद्ध कर देता है। तप को संयम का एक अंग माना

गया है। जो चारित्र अर्थात् संयम की आराधना करते है, उनको अवश्य ही नियम से तप की भी आराधना हो जाती है और जो तप की आराधना करते है उनको चारित्र की आराधना होती है। तप वह है, जहाँ अपने स्वरूप का मनन किया जाता है, जिसमें कर्मों का नाश किया जाता है, जहाँ पर पर्याय के अहंकार का त्याग किया जाता है। **कर्मक्षयार्थ तप्यत इति तप** (सर्वा. सि.) कर्मक्षय के लिये जो तपा है वह तप है।

८. **उत्तम त्याग धर्म** : त्याग शब्द त्यज् धातु से धात्र प्रत्यय लगकर निष्पन्न हुआ है। इसका अर्थ है - छोड़ना, परित्याग, छोड़ देना, छोड़कर चले जाना इत्यादि। मोक्षमार्ग में त्याग का बड़ा महत्व है। इसलिये इसका प्रयोग गृहस्थों के लिये दान के रूप में तथा साधुओं के लिये परिग्रह त्यागव्रत के रूप में किया गया है। त्याग से सुख ही सुख मिलेगा। त्याग अवगुणों का नाश करने वाला है इसकी चारों ओर निर्मल कीर्ति फैलती है। त्याग से शान्ति प्राप्त होती है यह मनोवैज्ञानिक सम्मत पूर्ण सत्य है। दान देने वाले का ह्रदय विशाल होता है जैसे - जैसे दाता परिग्रह का त्याग करता जाता है वैसे - वैसे उसके ह्रदय में आनन्द की तरंगे उठती है।

९. **उत्तम आकिञ्चन्य धर्म** : **न किञ्चन्य इति आकिक्रचनः** किंचित् भी परिग्रह का न होना आकिंचन है। आकाँक्षाओं की सीमा करना, अपनी इच्छाओं पर रोक लगाना ही आकिंचन है। **ममेदमित्यभिसन्धि निवृत्तिराकिञ्चन्यम्** यह मेरा है इस प्रकार की अभिसन्धि का त्याग करना आकिंचन्य है। सब परिग्रह से निवृत्त होना, ममत्व से रहित होना और रत्नत्रय में प्रवृत्ति होना आकिंचन्य व्रत है।

१०. **उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म** : ब्रह्मचर्य बड़ा व्यापक शब्द है। ब्राह्म का अर्थ आत्मा है, जो शुद्ध है, बुद्ध है, शाश्वत् आनन्द स्वरूप है। उसमें चर्या, मरण, पणिमन, लीनता आदि यदि एक शब्द में कहे तो आत्मा भावापन्नता - आत्ममयता, आत्मस्थता ब्रह्मचर्य है। उत्तम ब्रह्मचर्य मोक्षमार्ग के दस धर्मो में से एक है और अंतिम भी। जिस प्रकार मन्दिर बनाने के बाद स्वर्ण कलश चढ़ाया जाता है। उसी प्रकार यह ब्रह्मचर्य दस धर्मों में स्वर्ण कलश स्वरूप कहा गया है। **ब्रह्मणि आत्मनि चरति इति ब्रह्मचर्यः** ब्रह्मचर्य को आत्मा स्वरूप कहा गया है ब्रह्म अर्थात् आत्म में विचरण / आचरण करना उत्तम ब्रह्मचर्य कहलाता है।

रूद्रपल्लीयगच्छ के इतिहास पर संक्षिप्त प्रकाश

डा० शिव प्रसाद सिंह

निर्ग्रन्थ परम्परा के श्वेताम्वर सम्प्रदाय में चन्द्रकुल से उद्भूत प्रवर्तमान गच्छों में खरतरगच्छ का विशिष्ट स्थान है। प्रायः सभी मुख्य गच्छों से समय - समय पर विभिन्न शाखाओं - प्रशाखाओं के रूप में अनेक गच्छों-उपगच्छों का उद्भव हुआ। खरतरगच्छ भी इसमें अपवाद नहीं है। इस गच्छ की भी कई शाखायें अस्तित्त्व में आयीं, इनमें मधुकर खरतरशाखा, रूद्रपल्लीय शाखा, लघुखरतरशाखा आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। सांप्रत निबन्ध में रूद्रपल्लीय शाखा के इतिहास पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

जैसा कि इसके अभिधान से स्पष्ट होता है, रूद्रपल्ली नामक स्थान से यह गच्छ अस्तित्त्व में आया होगा। चन्द्रकुल के आचार्य अभयदेवसूरि (नवांगी वृत्तिकार) के प्रशिष्ट और जिनवल्लभसूरि के शिष्य जिनशेखरसूरि इस गच्छ के प्रवर्तक माने जाते है। खरतरगच्छपट्टावली के अनुसार आचार्य जिनवल्लभसूरि ने मुनि जिनशेखर को उपाध्याय पद पर प्रतिष्ठित कर उन्हें कुछ मुनिजनों के साथ रुद्रपल्ली भेजा। इस प्रकार खरतरगच्छ की एक शाखा के रूप में इस गच्छ के आस्तित्त्व में आने की नींव पड़ गयी और बाद में स्वतंत्र गच्छ के रूप में वह भली भांति अस्तित्त्व में आ गया।

रुद्रपल्लीयगच्छ में जिनशेखरसूरि, अभयदेवसूरि (द्वितीय), देवभद्रसूरि, श्रीतिलकसूरि, श्रीचन्द्रसूरि, विमलचन्द्रसूरि, गुणभद्रसूरि, संघतिलकसूरि, सोमतिलक (अपरनाम विद्यातिलकसूरि), देवेन्द्रसूरि, गुणाकरसूरि, अभयदेवसूरि (तृतीय), पृथ्वीचन्द्रसूरि, वर्धमानसूरि आदि कई प्रसिद्ध ग्रन्थकार और विद्वान् मुनिजन हुए है।

इस गच्छ के इतिहास के आंकलन के लिये सम्बद्ध मुनिजनों की कृतियों की प्रशस्तियां तथा प्रतिमालेख आदि उपलब्ध हुए है। जो १३वीं शती के

प्रारम्भ से लेकर १६वीं शती के अन्त तक मिल पाये हैं। इस गच्छ की स्वतंत्र रूप से कोई पट्टावली नहीं मिलती, किन्तु यह खरतरगच्छ से ही उद्भूत हुआ था अतः खरतरगच्छ की पट्टावली में स्वाभाविक रूप से इसकी उत्पत्ति की चर्चा मिलती है। जिसके अनुसार वि० सं० १२०४/ ईस्वी सन् ११४८ में जिनशेखरसूरि से इस शाखा का प्रादुर्भाव हुआ।

अध्ययन की सुविधा के लिये सर्वप्रथम साहित्यिक साक्ष्यों तत्पश्चात् अभिलेखीय साक्ष्यों का विवरण प्रस्तुत है।

१. जयन्त विजयकाव्य - यह रुद्रपल्लीयगच्छ के आचार्य अभयदेवसूरि (द्वितीय) द्वारा वि० सं० १२७८/ ईस्वीसन् १२२२ में रची गयी कृति है। इसकी प्रशस्ति में स्वगच्छ का उल्लेख किये बिना ग्रन्थकार ने अपनी लम्बी गुरु - परम्परा तथा रचनाकाल आदि का उल्लेख किया है। इसकी प्रशस्तिगत गुर्वावली इस प्रकार है :-

वर्धमान
|
जिनेश्वरसूरि
|
अभयदेवसूरि (प्रथम) नवांगीवृत्तिकार
|
जिनवल्लभसूरि
|
जिनशेखरसूरि
|
पद्मचन्द्रसूरि
|
विजयचन्द्रसूरि

अभयंदेवसूरि (द्वितीय) वि० सं० १२७८/ई० सन् १२२२ में जयन्तविजयकाव्य के रचनाकार ।

२. छह हजार गाथाओं में रचित यह कृति अभयदेवसूरि (द्वितीय) के पट्टधर देवभद्रसूरि के शिष्य श्रीतिलकसूरि की रचना है। इसकी प्रशस्ति में ग्रन्थकार ने अपनी गुरु - परम्परा तथा अपनी शिष्य सन्तति आदि का भी विवरण दिया है, जो निम्नानुसार है:,

क्रमशः

हिंसा की मानसिकता इस सदी की सबसे बड़ी चुनौती है

जैन संत मणिप्रभसागर के सानिध्य में आज एक सर्वधर्म अहिंसा सम्मेलन का राष्ट्रीय आयोजन छोटी दादावाडी के प्रांगण में किया गया। इस सम्मेलन में जैन समाज के सभी संप्रदायों के संतों के अलावा बौद्ध धर्म, सिक्ख धर्म सनातन धर्म, मुस्लिम धर्म, इसाई धर्म आदि सभी धर्मगुरूओं ने भाग लिया। सम्मेलन में बड़ी संख्या में आम नागरिक शामिल हुए।

इस सम्मेलन को संबोधित करते हुए सम्मेलन के प्रेरक जैन संत मणिप्रभसागर ने कहा कि विकास की आड़ में विनाश पनपा है। आज आर्थिक लालच में भयंकर हिंसा हो रही है। पशु धन घट रहा है, कत्लखाने बढ़ रहे है। खेती पर सब्सिडी खत्म हो रही है और कत्लखानों पर सब्सिडी बढाई जा रही है। आज जीवन मूल्य हीन होता जा रहा है। प्रतिष्ठा जीवन लेने को दी जा रही है। आज लोभ के कारण भारतीय संस्कृति का दोहन चिंताजनक है। सरकारी तन्त्र और मीडिया द्वारा मानसिकता प्रदूषित करने के निंदनीय प्रयास किये जा रहे हैं। मनोरंजन के नाम पर हिंसा प्रतिष्ठा पाये, अहिंसक समाज को इससे बड़ी और क्या चुनौती हो सकती है। उन्होंने अहिंसा के पक्ष में सभी धर्मगुरूओं को एकजुट होने का आह्वान किया।

फतेहपुरी मस्जिद के शाही इमाम डॉ. मुफ्ती एम. अकरम अहमद ने कहा कि धर्म के नाम पर हिंसा दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने कहा कि इस्लाम की आधार शिला ही मोहब्बत और सभी के सलामत की कामना है। उन्होंने कहा कि आर्थिक लाभ के लिये पशु हत्या और मांस का निर्यात सर्वथा अनुचित है। उन्होंने कहा कि धार्मिक विवादों का समाधान

संवाद से होना चाहिये, एक दूसरे के संहार से नहीं। उन्होने राजस्थान के सिरोही जिले में जैन मुनि पर हुए आक्रमण की कड़ी निंदा की।

चिन्मय मिशन के प्रमुख स्वामी तेजोमयानंदजी महाराज ने कहा कि एकात्म भाव ही अहिंसा का आधार है। अपनत्व का अभाव ही हिंसा को जन्म देता है। यह मैत्री भावना ही विश्व शांति का आधार है।

उप प्रवर्तक जैन मुनि श्री रवीन्द्र मुनि ने कहा कि आज हिंसा बलवती होती जा रही है। अहिंसा के पुजारी गांधी की समाधि पर हथियार बंद प्रहरियों का सुरक्षा प्रबन्ध है क्योंकि राष्ट्र नायकों को गांधी समाधि पर श्रद्धांजलि देनी है और अहिंसा के अग्रदूत के द्वार पर उनकी जान को खतरा है। हिंसा किसी समस्या का समाधान नहीं है। अणुबम का विकल्प है अणुव्रत ! नये - २ हथियारों का निर्माण भले ही राष्ट्रीय उन्माद पैदा करता हो, लेकिन अन्ततः यह मानवता के नाश की तैयारी है।

ईसाई जगत के फादर रीव. कैलीन सी. थीयोडोर ने कहा कि जब सूर्य निकलता है तब उसका प्रकाश और ताप सभी को बराबर मिलता है। आज आवश्यकता अहिंसा को गाने की नहीं, अपितु व्यवहार में अपनाने की है। अहिंसा की प्रतिष्ठा में राजनेताओं की भूमिका असंतोषजनक रही। आज आवश्यकता धर्म गुरूओं को नेतृत्व संभालने की है।

अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए पूज्य लामा डोबूम तुलकु ने कहा कि महात्मा बुद्ध और परमात्मा महावीर की शिक्षाओं की प्रासंगिकता जितनी आज है, उतनी शायद पहले कभी नहीं थी। हिंसा चाहे चिंतन की हो या वाणी की या कर्म की, सर्वथा त्याज्य है। घृणा मन से चाहिये। समाज में अहिंसा स्वतः स्थापित हो जायेगी।

तेरापंथ संघ के श्री किशनलालजी म. ने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हिंसा के शिक्षण और प्रशिक्षण पर करोडों रूपये खर्च किये जा रहे हैं, आज अहिंसा के प्रशिक्षण की आवश्यकता है। हिंसा भयभीत मन की उपज है व अभय अहिंसा का अमृत फल है। हमारी मानसिकता बदलनी चाहिये तभी ह्रदय परिवर्तित होगा।

इस राष्ट्रीय अहिंसा सम्मेलन में प्रो. रतन जैन ने ४ प्रस्ताव प्रस्तुत किये जो सर्वसम्मति से स्वीकार किये गये।

१- अहिंसा सम्मेलन राज. के सिरोही जिले में जैन मुनि एवं जैन मंदिरों पर हुए हिंसात्मक हमलों की कड़ी निंदा करता है। आर्थिक समस्याओं का समाधान परस्पर संवाद से होना चाहिये। सभी धर्म अपनी अपनी मान्यताओं का पालन करते हुए एक दूसरे के धर्म का आदर करे।

२- देश में बढ़ते पशु - वध को रोका जाये तथा मांस के निर्यात पर पूर्ण पाबंदी लगाई जाये।

३- देश में अहिंसा के शिक्षण और प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिये तथा इसे पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग बनाया जाये।

४- विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधि एक संयुक्त अहिंसा मंच की स्थापना करे तथा विश्व की वर्तमान समस्याओं के समाधान का अहिंसक विकल्प प्रस्तुत करें।

श्रमणश्रेष्ठ मणिप्रभसागर चातुर्मास समिति के तत्वावधान में आयोजित सम्मेलन का शुभारंभ श्री शांतिप्रकाश अशोककुमार अनूपशहर वालों के द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। श्री ललित, प्रदीप, दिलीप नाहटा परिवार ने सम्मान की प्रतीक शाल ओढ़ाकर धर्मगुरूओं का अभिनंदन किया।

समारोह के स्वागताध्यक्ष श्री शांतिलाल दफ्तरी जैन ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि गांधीजी की अहिंसा आज के सम्मेलन की पृष्ठभूमि है। जैन समाज के सभी वर्गो के नेताओं के रूप में श्री जे. एस. झवेरी, श्री मांगीलाल सेठिया एवं श्री रिखबचंद जैन ने भी सम्मेलन को संबोधित किया। सम्मेलन के संयोजक की भूमिका में श्री किशोर कोचर एवं श्री अशोककुमार जैन, श्री ललित नाहटा, श्री भँवर डोसी ने बताया कि इस सम्मेलन के प्रस्तावों को क्रियान्वित करने के लिये एक संयुक्त बैठक प्रस्तावित है। संस्था के अध्यक्ष श्री शीतलदास राक्यान ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। सम्मेलन में सभी धर्मों और संप्रदायों के हजारों नागरिकों ने भाग लिया। प्रो. रतन जैन ने समारोह का सफल संचालन करते हुए सभा को लगातार ४ घंटे तक बांधे रखा।

---o---

समाचारो की श्रंखला में -
प्राकृत भाषा के वरिष्ठ विद्वान् साहित्य वाचस्पति महोपाध्याय विनयसागर का अभिनन्दन समारोह

जैन विद्या के प्रकाशन तथा प्राकृत भाषा के अध्यापन के क्षेत्रों में संलग्न अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संस्था प्राकृत भारती अकादमी द्वारा जैन दर्शन एवं प्राचीन भारतीय भाषाओं के वरिष्ठ विद्वान् महोपाध्याय विनयसागरजी को **प्राकृत भारती गौतम गणधर पुरस्कार** - ९९ से सम्मानित किया गया।

प्राकृत भारती अकादमी के प्रांगण में इस भव्य अभिनन्दन समारोह की अध्यक्षता प्रसिद्ध जैन विद्वान डॉ० सागरमल जैन ने की। गणिवर्य श्रीमहिमाप्रभसागर जी म० सा., महोपाध्याय श्रीललितप्रभसागर जी म० सा., महोपाध्याय श्री चन्द्रप्रभसागरजी म० सा. साध्वी श्रीसुलक्षणाश्रीजी म० सा. आदि के सान्निध्य में हुआ यह कार्यक्रम श्री वीर बालिका विद्यालय की छात्राओं द्वारा मंगलगान से आरम्भ हुआ।

प्राकृत भारती अकादमी के संस्थापक सेबी अध्यक्ष श्री देवेन्द्रराज मेहता, जो इस समारोह के स्वागताध्यक्ष भी थे, ने प्राकृत भारती का संक्षिप्त परिचय देते हुए महोपाध्याय विनयसागरजी के योगदान की चर्चा करते हुए कहा - देश के प्राकृत भाषा के सबसे प्रमुख विद्वानों में महोपाध्याय विनयसागरजी की गणना होती है। मैंने स्वयं ने कई बार यह देखा है कि कई प्रमुख आचार्यों के साथ विचार-विनिमय करते हुए विनयसागरजी के मत को उन लोगों ने स्वीकार किया है। आज भी बड़े -बड़े प्रमुख आचार्य समय-समय पर इनसे परामर्श लेते रहते है। इनका संस्कृत, गुजराती, अपभ्रंश, राजस्थानी आदि भाषाओं पर भी समान

अधिकार है। प्राकृत भारती के संस्थापन काल से लेकर आज आप जो इसका भव्य स्वरूप देख रहे हैं, वह इन्हीं के कठिन प्रयासों का ही सुफल है। इन्होंने इस संस्था को अपने खून पसीने से सींचा है। साथ ही प्राकृत भारती के प्रकाशनों, प्राकृत भाषा के शिक्षण, वाचनालय, सन्दर्भ पुस्तकालय का संक्षिप्त परिचय दिया। अन्त में उन्होंने कहा कि विद्वानों को पुरस्कृत करने का प्राकृत भारती का यह सर्वप्रथम प्रयास है, भविष्य में भी प्रतिवर्ष हम विद्वानों को पुरस्कृत करते रहेंगे। इस पुरस्कार का नाम प्राकृत भारती गौतम गणधर पुरस्कार घोषित किया गया।

सर्वप्रथम महोपाध्याय ललितप्रभसागरजी ने अपने उद्बोधन में प्राकृत भारती तथा जितयशाश्री फाउण्डेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित एक वरिष्ठ विद्वान के अभिनन्दन समारोह की अनुमोदना करते हुए कहा-इतिहासवेत्ता, आगमों के तलस्पर्शी ज्ञाता पुरातत्त्वविद् साहित्य वाचस्पति महोपाध्याय विनयसागरजी की अनवरत् साहित्य सेवा को देखते हुए गणिवर्य श्री महिमाप्रभसागरजी महाराज और हमारी वर्षों से अभिलाषा थी कि इनका अभिनन्दन अवश्यमेव किया जाए। ५ वर्ष पूर्व योजना भी बनी थी, किन्तु वह मूर्त रूप न ले सकी। इस वर्ष श्री मेहतासा, के सहयोग से प्राकृत भारती अकादमी और जितयशाश्री फाउण्डेशन के माध्यम से हमारी वह चिर अभिलाषा पूर्ण हो रही है। इनका अभिनन्दन करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता है। इनकी ज्ञान आराधना सतत् प्रवर्धमान होती रहे, यही हम सब लोगों की हार्दिक अभिलाषा है।

आमंत्रित विशिष्ट विद्वानों में संस्कृत के सुपरिचित विद्वान् देवर्षि कलानाथजी शास्त्री ने प्राचीन भारतीय भाषाओं के अध्ययन व शोध के क्षेत्र में प्राकृत भारती अकादमी तथा महोपाध्याय विनयसागर जी के कार्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि ये प्राकृत भाषा के इने-गिने विद्वानों में से हैं। जितना अधिकार इनका प्राकृत भाषा पर है, उतना ही अधिकार इनका संस्कृत भाषा पर भी है। इनका यह अभिनन्दन वर्षों पूर्व हो जाना चाहिये था। खैर .... विलम्ब से ही सही इनको अभिनन्दित कर भारतीय वाङ्मय के समस्त उपासक अभिनन्दित हो रहे हैं।

रामपुर से आए डॉ० नागेन्द्र जिनके द्वारा महोपाध्याय विनयसागरजी के

अभिनन्दन ग्रन्थ में लिए गये हैं, ने ग्रन्थ का परिचय देते हुए कहा कि इस अभिनन्दन ग्रन्थ का नाम महोपाध्याय विनयसागरः जीवन साहित्य और विचार रखा गया है। इसके तीन खण्ड हैं :-

१. सादर अभिनन्दन के अन्तर्गत - पूज्य आचार्यों, मुनिवृन्दों, माननीय विद्वतजनों, समाज के अग्रगण्यों, मित्रों आदि की शुभकामनाओं का संचयन।

२. जीवन और साहित्य खण्ड में जीवन परिचय देते हुए इनके द्वारा लिखित, सम्पादित, अनुदित कृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन है।

३. विचार और अनुसंधान नामक खण्ड में इनके द्वारा लिखित गवेषणापूर्ण लेखों का संग्रह है।

इन भाषाओं के पश्चात् डॉ० नागेन्द्र ने अभिनन्दन ग्रन्थ मुख्य अतिथि को विमोचन हेतु दिया। करतल ध्वनियों के बीच विमोचन के पश्चात् ग्रन्थ की एक प्रति अभिनन्दित विद्वान को डॉ० नागेन्द्र द्वारा भेंट की गई।

महोपाध्याय विनयसागरजी के अभिनन्दन का मुख्य कार्यक्रम डॉ० कमलचन्द सोगाणी, सचिव-प्राकृत भारती अकादमी द्वारा अभिनन्दन पत्र के वाचन द्वारा हुआ। प्राकृत भारती की ओर से यह अभिनन्दन पत्र डॉ० सोगाणी तथा श्री संजय कानोडिया, अध्यक्ष-प्राकृत भारती अकादमी ने महोपाध्याय विनयसागरजी को अर्पित किया। देवर्षि कलानाथजी शास्त्री ने तिलक किया, श्री गुलाबमलजी सिंघवी, उपाध्यक्ष-प्राकृत भारती अकादमी ने नारियल भेंट किया, डॉ० मुकुन्द्र लाट ने माल्यार्पण किया तथा श्री देवेन्द्रराज मेहता ने साफा पहनाकर महोपाध्याय विनयसागरजी का सम्मान किया।

प्राकृत भारती तथा जितयशाश्री फाउण्डेशन की ओर से एक विशेष रजत पत्र भी भेंट किया गया जिसका वाचन श्री डी. आर. मेहता ने किया। इस अवसर पर प्रदान की गई एक लाख एक सौ गयारह रुपये की गणधर गौतम पुरस्कार राशि की थैली श्री दुलीचन्दजी टांक, कोषाध्यक्ष - प्राकृत भारती अकादमी ने समारोह अध्यक्ष के हाथों महोपाध्याय विनयसागरजी को दिलवाई।

प्राकृत भारती द्वारा इस अभिनन्दन के पश्चात् समारोह में आए ३० से अधिक विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने माल्यार्पण द्वारा महोपाध्याय विनयसागरजी का सम्मान किया।

अपने इस अभूतपूर्व सम्मान से भाव विह्वल हो महोपाध्याय विनयसागरजी ने अपने धन्यवाद भाषण का आरम्भ सस्वर स्तुति पाठ द्वारा किया। उन्होंने कहा कि आज मेरा जो कुछ भी स्वरूप है, वह सब मेरे परम पूज्य गुरुदेव श्री जिनमणिसागरसूरिजी महाराज के अनिर्वचनीय अमोघ आशीर्वाद एवं कृपा का फल है। आपने समस्त विद्यागुरुओं का संस्मरण करते हुए निरन्तर साहित्य सेवा में प्रवृत्त रखने का गौरव श्री डी. आर. मेहता को प्रदान किया। इस अभिनन्दन को पुण्य स्वरुप गुरु चरणों में अशेष आस्था के साथ समर्पित करते हुए समस्त आत्मीयजनों के प्रति ह्रदय से आभार प्रकट किया।

पुरस्कार राशि में अपनी ओर से उतनी ही रकम मिला एक चैरिटेबल ट्रस्ट बनाने की घोषणा द्वारा महोपाध्याय विनयसागरजी ने अपनी निस्पृह सेवा भावना का परिचय दिया। एक हजार के लगभग उपस्थित जन समुदाय ने करतल ध्वनि द्वारा इस भावना का स्वागत किया।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ० सागरमल जैन ने ऐसे विद्वानों की नई पीढ़ी तैयार करने पर जोर देते हुए पाण्डुलिपि विशेषज्ञ प्राकृत एवं अनेक विषयों के गहन ज्ञाता भाई श्री विनयसागरजी की ज्ञानराधना की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। पुरस्कार राशि में उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर प्राकृत एवं समाज सेवा के कार्यों में लगाने के विनयसागरजी के निर्णय को उनकी निस्पृहता का परिचायक मानकर उनका अभिनन्दन किया।

समारोह का समापन महोपाध्याय चन्द्रप्रभसागरजी म० सा. के भावपूर्ण उद्बोधन से हुआ। महोपाध्याय विनयसागरजी के वैदुष्य एवं प्रतिभा का अभिनन्दन किया।

विदुषी साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म० ने इनके ज्ञान गरिमा की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

अंत में श्री संजय कानोडिया ने अभिनन्दित विनयसागरजी एवं श्री डी. आर. मेहता की अतुलनीय सेवाओं का उल्लेख करते हुए उपस्थित जन समुदाय का, समारोह को सफल बनाने में प्रमुख सहयोगी कार्यकत्ताओं का धन्यवाद दिया।

---o---

मलयासुन्दरी चरित्र

मैं भी भय के मारे भाग निकली थी, परन्तु उस समय मुझे इस राक्षस ने पकड़ लिया और मुझ से बोला कि भद्रे ! तेरे लिए तो मैंने यह सब प्रयास ही किया है। अगर तू यहाँ से कहीं भी जायेगी तो मैं फिर तुझे जहां होगी वहां से यहां ले आऊँगा। इसलिए तूझे इस राजमहल को छोड़कर कहीं भी न जाना चाहिये और तुझे किसी भी तरह का भय न रखना चाहिये। मैं सब तरह से तेरी रक्षा करूंगा। इस प्रकार कहकर उस राक्षस ने मुझे यहां पर रखा हुआ है। वह दिन के समय न जाने कहां चला जाता है, परन्तु दीये बत्ती के समय वह रात को यहां ही आ जाता है। इस तरह मेरे दुख में दिन व्यतीत हो रहे हैं।

हे पथिक ! यह इतिहास सुन कर मैंने विजया रानी से कहा - कि भाभी ! जो तू इस राक्षस की कुछ मर्म बात बतलावे तो मैं इसे निग्रह करने का उपाय करूँ, और तुझे इसके फंदे से छुड़ा कर इससे अपने भाई का बदला लूं।

विजया ने कहा - जब यह राक्षस आकर सो जाता है तब इसके पैर के तलिये घी से मर्दन किये जाये तो वह बहुत जल्दी अचेतन के समान देर तक महानिद्रा में पड़ा रहता है। उस समय अगर आप कुछ कर सकते हैं तो अपनी शक्ति को अजमाना चाहिये। इसके सिवाय इस राक्षस को निग्रह करने का अन्य कोई उपाय नहीं है। इसमें एक यह भी बात है कि स्त्री के हाथ से तलिये मर्दन करने से उसे वैसी निद्रा नहीं आती जैसी कि पुरुष के हाथ से मसलने से आती है। परन्तु चरण स्पर्श करने से पहले अगर उसे यह मालुम हो जाय कि यह पुरुष है तो वह अपना पैर भी न छूने देगा और जान से मार डालेगा।

इस प्रकार शहर के उजाड़ होने का कारण अपनी भाभी के मुख से सुन कर मैं किसी उत्तम, उत्तर साधक की खोज में फिरता था। इतने में ही अकस्मात् आप के मुझे दर्शन हुए हैं। उत्तम पुरुष ! अगर आप मेरी सहायक बनें तो मैं उस राक्षस को आधीन कर सकता हूँ। आप के जैसे भद्राकृति वाले पुरुष पृथ्वी पर परोपकारी ही होते हैं। सज्जन पुरुष अपना काम छोड़कर भी परकार्य करने के लिये उद्यम करते हैं। देखो तो यह चंद्रमा चांदनी से अपने भीतर रहे हुए मृगलांछन को दूर न करते हुए भी संसार भर को धवलित करता है। जगत के वृक्ष सूर्य का ताप सहनकर प्राणियों को छाया देते हैं। समुद्र, नाव, जहाज आदि के क्षोभ को सहन करता है। मेघ परार्थ ही वृष्टि करता है। पृथ्वी तमाम जीवों को आश्रय देती है। यह सब परोपकार के लिये ही कष्ट सहन करते हैं। नदियां अपने पानी को स्वयं आप नहीं पीती। वृक्ष अपने फल स्वयं नहीं खाते। बारिश क्या धान्य भक्षण करती है? इसका परिश्रम मात्र परोपकार के लिए ही है। हे नरोत्तम ! मैं तेरी सहायता से अपने उजड़े हुए शहर को फिर से पूर्व स्थिति में बसाना चाहता हूँ। इस कार्य में कारण भूत होने से तेरी जगत में कीर्ति और यश व्याप्त होगा। इसलिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरे इस महान कार्य में प्राणप्रण से सहायक बनें।

प्रत्युपकार और समय सूचकता

रात्रिदेवी ने पृथ्वी पर अपनी काली चादर बिछा दी है। अन्धकार ने चारों दिशाओं में अपना साम्राज्य जमा लिया है। इस समय शून्य नगर में मनुष्य तो क्या पशुओं का भी शब्द सुनाई नहीं देता। शहर के तमाम हिस्सों में सन्नाटा छा रहा है, ऐसे प्रशांत समय में जयचन्द्र राजा के महल में दो पुरुष, कुछ आवश्यक सामग्री लेकर एक गुप्त स्थान में खड़े हैं। या तो कार्य सिद्ध करेंगे या शरीर का नाश होगा, बस यही भावना उन दोनों युवकों के अन्तः करण में रम रही है।

पाठक महाशय, भ्रान्ति में न पड़ें, ये दोनों युवक वर्तमान परिच्छेद के नायक विजयचन्द्र और गुणवर्मा ही हैं। परोपकार करने में तत्पर वणिक - पुत्र गुणवर्मा ने विचार किया कि मेरे किये हुए उपकार से वश होकर विजयचन्द्र अपने क्रोध को शांत कर मेरे पिता और चाचा को बंधन मुक्त कर देगा। क्योंकि इसी ने उन्हें स्तंभित किया है।

अहा! पुत्र का कैसा पितृवात्सल्य ! कैसी भक्ति ! कैसा प्रेम ! पिता को दुःख से मुक्त करने के लिए ऐसे दुष्ट राक्षस के पंजे में फँसने का दुःसाध्य कार्य को भी उसने स्वीकार कर लिया। क्योंकि इस समय राक्षस के घी से चरण तलिये मर्दन करने का भयानक काम उसने अपने जिम्मे लिया है।

विजयचन्द्र ने कहा - गुणवर्मा ! जब तुम राक्षस के चरण तलिए घीसे मर्दन करने का काम करोगे उस वक्त मैं स्तंभनी विद्या के एक हजार जप द्वारा अन्तर्मुहूर्त में उसे स्तंभित कर आधीन कर लूँगा। इस प्रकार परस्पर संकेत कर वे दोनों युवक घोरान्धकार में अपने उद्देश्य को सिद्ध करने की धुन में सावधान हो छिप कर खड़े हैं। ठीक, इसी समय भयानक रूप में उस राक्षस ने महल में प्रवेश किया। वह आते ही बोलने लगा, अरे ! आज इस महल में मनुष्य की बू कहां से आ रही है? विजया ! क्या महल में आज कोई मनुष्य आया है ? तुझे मालूम हो तो बतला, मैं अभी उस को शिक्षा दूँगा।

विजया ने कहा - मैं खुद ही मनुष्य हूँ आपके भयसे यहाँ पर दूसरा मनुष्य कैसे आ सकता है? यह उत्तर सुनकर विश्वास कर वह राक्षस एक पलंग पर सो गया। उसे कुछ निद्रित होता देख विजया तत्काल वहां से उठ कर एक तरफ हो गई, उसके बदले स्त्री वेश में गुणवर्मा वहाँ आ उपस्थित हुआ और साहस धारण कर धीरे से राक्षस के पैर के तलिये मर्दन करने लगा। इधर विजयचन्द्र ने भी सावधान रहकर स्तम्भनी और वशीकरणी विद्या का जाप प्रारंभ कर दिया।

मनुष्य गंध आने से राक्षस बार बार पलंग से उठता है, परन्तु उस वक्त गुणवर्मा द्वारा चरण मर्दन की क्रिया झड़प से होने के कारण वह मूर्छित सा हो निद्रालू होकर फिर शय्या में लेट जाता है। इस तरह मंत्र जाप पूरा होने पर विजयचन्द्र के इशारे से गुणवर्मा ने चरण मर्दन करने की क्रिया बंद

कर दी, और वे दोनों जने राक्षस के सन्मुख आ खड़े हुए। जागृत उन युवकों को अपने सन्मुख खड़े देख उस राक्षस ने क्रोधायमान हो उन्हें मारने के लिए उपक्रम किया। परन्तु मंत्र के प्रभाव से वह उठने तक के लिये भी समर्थ न हो सका। अन्त में जब उसका कुछ भी जोर न चला तब शांत हो कर बोला - मंत्र बल द्वारा मंत्रित करने से आज मैं आप लोगों का दास बन चुका हूँ। इसलिये आप मुझे आज्ञा करें कि मैं आपकी क्या सेवा करूं।

राक्षस को स्वाधीन हुआ देख विजयचन्द्र ने कहा - हे राक्षसेन्द्र। अब तू इस नगरी के प्रति वैरभाव को छोड़ दे, और नगर की पूर्ववत शोभा कर तथा भंडारों को धन - धान्य से परिपूर्ण कर। विजयचन्द्र के कथानुसार राक्षस ने तमाम बातें मंजूर कर लीं और अपनी दिव्य शक्ति से उसने थोड़े ही समय में नगर की पूर्ववत् शोभा बढ़ा दी। विजयचन्द्र ने तित्तर वित्तर होकर भागी हुई प्रजा को जहाँ तहाँ से वापस बुला लिया। पहले के ही मंत्री को उसने प्रधान पद समर्पित किया। प्रधान आदि राज पुरुषों और प्रजा समुदाय ने मिल्कर विजयचन्द्र को राज्यासन पर बिराज मान कर दिया। विजयचन्द्र भी संतान की तरह प्रजा पालन करने लगा। उसने अपने प्रचंड प्रताप से और नीति निपुणता से पहले से भी अधिक अपनी राजधानी की शोभा बढ़ा दी। गुणवर्मा को अधीसन पर बैठा कर कृतज्ञ राजा विजयचन्द्र ने नम्रता से कहा - गुणवर्मा! यह तमाम राज्य ऋद्धि तेरी सहायता से प्राप्त हुई है, इस लिए इस राज्य में से तुम इच्छानुसार ग्रहण करके मुझ पर किये गए उपकार से अनुगृहीत करो।

क्रमशः

संकलन-

चांदी के वरक में आंतें

क्या आप अपने भोजन की समाप्ति पान, मिठाई या सुपारी से करना पसन्द करते हैं। ? जब इन पर चांदी का वरक चढ़ा रहता है तो ये और अधिक स्वादिष्ट लगते है। पान, विशेषकर वह जिसमें पीपरमिंट का थोड़ा स्वाद रहता है, चांदी के वरक में लपेटा होता है। घर में त्योहारों के अवसर पर तैयार की जाने वाली मिठाइयाँ वरक से ढकी जाती हैं। आप मंदिर में जाये, विशेषकर जैन मंदिर में तो पाएंगे कि प्रसाद पर वरक चढ़ा हुआ है। बाजार में वरकों की अधिकांश आपूर्ति अहमदाबाद, जैन समुदाय की राजधानी और वह शहर जिसमें भारत के सबसे ज्यादा शाकाहारी रहते हैं, करता है। राजस्थान और गुजरात के बहुत से जैन इस वरक व्यापार में संलग्न हैं।

चांदी का वरक ज्यादा कीमती नहीं होता। इसकी कीमत उसके वजन पर निर्भर करती है। १५० वरकों की एक गड्डी प्रत्येक की कीमत १०० से २०० रु तक अथवा लगभग एक रुपया प्रति वरक होती है। पर इसके लगने से उत्पाद महत्वपूर्ण हो जाता है। मिठाई और सुपारी ज्यादा लुभावने लगते हैं। यहां तक कि सस्ते फलों से अलग दीखने के लिए कीमती फलों पर चमकदार वरक लगाया जाता है। क्या आपने बड़े - बड़े लाल सेब नहीं देखें जिनमें वरक के कुछ हिस्से चिपके रहतें हैं ? यहां तक कि कुछ आयुर्वेदिक दवाओं का निर्माण करने वाली कंपनियां भी विशेष दवाओं को और अधिक विशिष्ट बनाने के लिए भी वरक का इस्तेमाल करती हैं।

क्या आप जानते है कि चांदी का वरक कैसे बनता है? चांदी की पतली चादर अथवा कुछ मामले में सोने की पतली चादर, को बैल या भैस की ताजी आंत की कई परतों के पुस्तकानुमा रूप के बीच रख कर तैयार किया जाता है। सामान्यतः पशु वधशाला में मारा जाता है, उसकी आंते निकाली जाती हैं और भाप जैसी गरम अवस्था में उन्हें तुरन्त वरक निर्माता के हाथ बेच दिया जाता है। वरक बनाने में पुरानी आंतों का प्रयोग नहीं किया जा सकता। यहां तक कि एक दिन पुरानी आंतों में भी लचीलापन नहीं रह जाता। वरक निर्माता रक्त और मल निकाल कर आंते साफ करता है। फिर उन्हें कई टुकड़ों में काटकर एक के ऊपर एक रखता चला जाता है। उसके बाद उन्हें वह अपने कार्यस्थल पर ले जाता है जो आम तौर पर आप यकीन करें या नहीं किसी मंदिर का बाहरी स्थान होता है। वहां वह चांदी की चादरों को आंतों की परतों के बीच रखता है और तब तक कूटता रहता है जब तक चांदी पर्याप्त रूप में पतली होकर पत्थर का रूप लेकर बेचने योग्य नहीं हो जाती। आंते हथौड़े का प्रहार झेलने के लिए काफी मजबूत होती हैं और पतले होने तक धातु की चादर को जोड़े रहती है। फिर भी आंत के कण चांदी के वरक में चिपक जाते हैं क्योंकि हथौड़े के प्रहार से आंत और धातु दोनों प्रभावित होते है। जैसे ही वरक तैयार होते हैं, उन्हें थोक के भाव से सुपारी उद्योग को बेच दिया जाता है। मिठाई की दुकानें इन्हें बड़े सवेरे ही खरीद लेती हैं क्योंकि वरक केवल ताजी मिठाई में ही चिपकता है। छोटी हैसियत के स्वतन्त्र निर्माता मंदिरों को वरक बेचते हैं।

अधिकांश मंदिरों में मालुम रहता है कि वरक कैसे बनता है, इसलिए मुझे आश्चर्य होता है कि वे उस वस्तु को कैसे खरीदते हैं। यह चीज खाने में गन्दी है। कितने मांसाहारी हैं जिन्होने आंते खाई हैं ? वरन् सुस्पष्ट रूप से मांसाहारी हैं। चांदी का वरक पान, सुपारी और मिठाई को भी मांसाहारी बना देता है। इसे मंदिर में लोगों को खिलाया जाए यह कितने शरम की बात है। इंडियन एयरलाइंस ने यह मानते हुए कि वरक मांसाहारी होता है अपने भोजन आपूर्तिकर्ताओं को कुछ वर्ष पूर्व हिदायत दे दी कि वायुयानों में परोसी जाने वाली मिठाई में इसका इस्तेमाल न किया जाए। जब होटल भारतीय भोजन वाले रेस्टोरेन्ट में गुलाब जामुन और पान पेश करें, तो उन्हें वरक इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

पान खाने वाले शाकाहारियों को जिन्होंने अपने पूरे जीवन में मीलों लंबी बैल की आंते खाई हैं, मैं एक और आनन्ददायक सूचना देना चाहूंगी , जो चूना आप खाते हैं, वह भी शाकाहारी नहीं है। कुछ चूना तो वास्तविक चूने से तैयार किया जाता है। जो शाकाहारी पर हानिकारक होता है। परन्तु पान वालों में बड़ी मात्रा में बेचा जाने वाला चूना समुद्री शंखों से बनाया जाता है।

समुद्री शंख निर्जीव वस्तुएं नहीं हैं। वे छोटे समुद्री प्राणियों के शरीरिक अंग होते हैं। चूंकि ये प्राणी समुद्र एवं समुद्र तटों को साफ रखते हैं इसलिये हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं। इन छोटे प्राणियों को समुद्री जल से बाहर निकाल कर मार डाला जाता है। उनके खोल को आग पर गरम करने से बेक इथिल नामक मिश्रण बनाया जाता है जब तक वह नरम नहीं हो जाता । इसके बाद उसे सुखाया जाता है और पीस कर सफेद चूर्ण बना लिया जाता है। इसमें चिपकने वाला रसायन मिलाने पर चूना तैयार हो जाता है जिसे पान में इस्तेमाल किया जाता है। जब भी आप मुंह में चूना रखते हैं, आप मृत समुद्री पशु के अवशेष खा रहे होते हैं। यह उसी तरह है जैसे आप बकरी या सूअर मार कर खाएं क्योंकि जीवन और पीड़ा सभी प्राणियों में समान होती है।

अगली बार आप पान खाइए, तो चूने को छोड़ दीजिये और वरकदार मिठाई और सुपारी का त्याग करते हुए पशु की आंतें खाना बन्द कर दीजिए। इससे भी बेहतर होगा कि आप किसी सुपारी फैक्ट्री के स्वामी को जानते हों, तो उसे वरक का प्रयोग बन्द करने के लिए कहें। कभी -कभी सुपारी फैक्ट्रियां खराब या सड़ी सुपारी का प्रयोग करती है जो शरीर के लिए बहुत खतरनाक होता है। पर पीपरमेंट की खुशबू और वरक में यह सब छिप जाता है। अगर फैक्ट्रियां चांदी का वरक लगाना बन्द कर दें तो आप स्वयं जान सकते हैं कि सुपारी नई एवं खाने योग्य है या नहीं। इस बात का भी ध्यान रखिए कि एक जैन अनुयायी, जो वरक व्यापार में संलग्न है, बिल्कुल उसी तरह हैं जैसे कि एक चमड़ा उत्पादक या व्यापारी या फिर उस जैन की तरह हैं जो वनस्पति में गाय की वसा मिलाता है। इनमें से प्रत्येक मृत पशुओं के उत्पादों का व्यापार करता है।

मेनका गांधी

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139, Resi : 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta - 700 020
Ph: 247-6874, Resi : 244-3810

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Phone : 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta - 700 007
Phone : 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box : 16127, Cal - 17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax : (033) 240 0098, 2471833

KUMAR PAL BAHADUR SINGH DUGAR
2F, Garcha First Lane, Calcutta - 700 019
Phone : (O) 2378841
(R) 475-9712/2807

IN THE MEMORY OF PRABHAT NAHATA
PRADIP NAHATA
139/C/4 Anand Palit Road, Calcutta - 700 014
Phone : 2445839

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Calcutta - 700 019
Ph. : (O) 2208967, (R) 2471750

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Phone : (O) 235 0623, (R) 239-6823

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Phone : 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

N. K. JEWELLERS
Gold Jewellery & Silver Ware Dealers
2, Kali Krishna Tagore Street, Calcutta - 700 007

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goal Para, Assam

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Phone : 238-8677/1647, 239-6097

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Phone : 236-3028, 237-4039

PRITAM ELECT. & ELECTRONICS PVT. LTD.
22, Rabindra Sarani, Shop No. G-136
Calcutta - 700 073, Ph: (033) 236-2210

IN THE MEMORY OF LATE
JITENDRA SINGH NAHAR
Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Phone : (O) 244-1309, (R) 475-7458

SMT. ANGOORI DEVI SINGHI
'SINGHI PARK'
48/3 Gariahat Road, Calcutta - 700 019
Phone : 4642851/3511

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Phone : Shop - 227-1857 (R) 238-0026

VISHESH AUTOMATIONS PVT. LTD.
Dealers of IBM, HCL-H.P. Seimens & Toshiba
16D, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Phone : 476-2994, 455-0137
Fax : 91-33-4552151

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East
Calcutta - 700 069

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-4755, (R) 238-0817

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071
Ph : 282-4649, Resi : 247-2670

P. C. JAIN
B-14, Sarvodaya Nagar, Kanpur - 208005
Ph: 29-5552/29-5955

MANI DHARI TAR UDYOG
Manufactureres of Flexible Ribbon,
Hookup, Main Cards, P.V.C. Insulated Wires and Cables.
THENWAR LAL JAIN
96, Old Roshan Pura, Najaf Garh
New Delhi - 110043, Ph. (O) 5016527
(R) 545 3415, 542 3304
Mobile : 9811075330,

ASHOKE KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Calcutta
Ph: 237 4132/236 2072

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi-221401 (U.P.)
Ph : (O) 05414-25178, 25778, 25779
Bikaner Ph : 0151-522404, 25973
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151- 61256 (Bikaner)

C. H. SPINNING & WEAVING
MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Phone : 464-1186

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Phone : 284-0612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

A.C. LOCKS CO.
22 Bonfield Lane, Calcutta - 700 007

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street
2nd Floor, Calcutta -700 007
Ph: (033) 230-1329, 232-1033
Fax: 91-33-2302413

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Phone: 2477450/5264

UJJWAL TRADING PVT. LTD.
Regd Office :11, Clive Row
3rd Floor, Room no. 14
Cal -700 001, Ph: (O) 242-4131/4756

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007
Phone -Gaddy-233-1766/238-8846
Mobile : 98 3102 8566
Resi : 355-9641/7196

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi : 464-2783

JAYSHREE EXPORTS
A Govt. of India Recognised Export House
105/4 Karaya Road, Calcutta - 700 017
Phone : 247-1810/1751, 240-6447
Fax : 91-33247-2897

MAHAVIR COKE INDUSTRIES (P) LTD.
1/1A Biplabi Anukul Chandra Street
Calcutta - 700 072
Ph : 215-1297, 236-4230/4240

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No. 4
Calcutta - 700 071, Ph: 2296256/8730/1029
Resi : 2476526/6638/2405126
Telex : 021 2333, ARBI IN, Fax : 226-0174

In the memory of—
HARAKH CHAND NAHATA
Lalit, Pradeep, Dilip Nahata
21, Anand Lok, August Kranti Marg
New Delhi - 110 049
Ph: Resi. 625-1065/7653/6089
Off : 338-1735/5923

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable : SWADHARMI, Fax : (033) 2209755
Resi : 464-3235/1541, Fax : (033) 4640547

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta -700016
Ph: 2264943, 292194, Fax: (033) 2457390

GRAPHIC PRINT & PACK
13A, Dacars Lane (Ground Floor) Calcutta-69
Phone : 248-1533, 248-0046

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Ph: (R) 455-3586

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Calcutta - 700 026
Phone : 476-1533

CALTRONIX
12, India Exchange Place
3rd Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 220-1958/4110

MOTILAL BENGANI CHARITABLE TRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Phone : 220-9255

Dr. ANJULA BINAYIKA
M.D. DND, M.R.C.O.G (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Phone : 474-8008

ABHANI BACHHRAJ
Fancy Saree Emporium
156, J. L. Bajaj Street, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Ph·: Shop- 238-6582, 239-0079
Resi- 483988/2573

APARAJITA BOYD
9/10, Sitanath Bose Lane, Salkia
Howrah - 711 106, Phone : 665-3666/2272

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta -700068
Phone: 4720610

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Phone : 239-1408

SIDDHA NIKETAN
Golden Chance to book flat in Jaipur
8, Ho Chi Minh Sarani
Calcutta - 700 071, Ph : 282-2164/4577

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1 M.G. Road, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-9356/0950
(Fact) 557-1697/7059

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Phone : 953902/252759
Fax : 033-252902

AKHILESH KUMAR JAIN
JUTE BROKER
9, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Phone : 221-4039, 210-2760, (R) : 660-1604

COMPUTER EXCHANGE
'Park Centre' 24 Park Street
Calcutta - 700 016, Phone : 229 5047, 9110

ACARDIA SHIPPING LTD.
22, Tulsiani Chambers
Nariman Point, Bombay - 400 021

NARENDRA JAIN
Super Iron Foundry
7, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 001
Phone : 225-3785/0069
Works : 651-3144
Fax : 91-33-2250198, 943333, 954321
(Resi) 554 1289

SUNDERLAL DUGAR
R.D.B. Industries Ltd.
Regd. Off : Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph : 248-5146/6941/3350, Mobile : 9830032021
Office : Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Calcutta - 700 001, Ph : 220-2389/3570/3569

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph : 238-7281, 230-1739

ABHAY SINGH SURANA
Surana House
3, Mango Lane, Calcutta - 700 001
Phone : 248-1398/7282

VIJAY AJAY
9, India Exchange Place
Room No - 4/2, 4th Floor, Calcutta - 700 001
Phone : (O) 220-6974/8591/7126, 243-4318
Fax : 220 6974

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Calcutta - 700 001
Phone : (O) 248 8576/0669/1242
Resi - 225 5514, 237 8208, 229 1783

DHARAM CHAND SARAOGI SMRITI NYAS
'Jain House'
8/1 Esplanade East
Calcutta - 700 069

IN THE MEMORY OF VIJAY SINGH BADER
Ratan Bader, Sudarsan Bader
26, Indian Mirror Street
Calcutta - 700 013, Phone :

GYANI RAM HARAK CHAND SARAOGI CHARITABLE TRUST
P-8 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Phone : 239 6205/9727

ASHOK TRADING COMPANY
Authorised Distributors of
J.K. Engineering Steel Files & Drills I.T. Cuttings, Tools
Miranda Tools & (Hacksaw Blades) BIPICO-ECLIPSE
18C, Sukeas Lane, Calcutta - 700 001
Ph : 242-2345/4461

FORT GLOSTER INDUSTRIES
31 Chowranghee Road, Calcutta - 700 016
Ph : 2462289 (Direct), 2498243/44/45
2490846,2454242, 2469551
Resi- 4553632/4399, Fax : (91) 033-2495665
Gram : gloscab, E-mail : gloster ho @ sms
sprintrgg ems V.S.N.L. Net in

SPACE 'N' WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Calcutta - 700 001
Fax : 242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

D. K. SYNTHETICS
Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 232-6040, (R) 684181

S. P. SYNTHETICS
House of Exclusive Shirtings
38 Armenian Street, 1st Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 235 7312, Shop : 230 1180
Resi : 241 6831

H. R. ELECTRICALS
Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare parts
Siemens, English Electric L.T/ L.K. B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No - 712A
South Block, Calcutta - 700 001
Room No - 314, 3rd Floor
Phone : (O) 2355009/1299, (R) 660-4332

BOTHRA & BOTHRA
12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Calcutta - 700007
Phone : Shop 230 0216, (R) - 2359657/9312

CHUNNILAL ASHOK KUMAR
30, Cotton Street, 3rd Floor, Calcutta - 700 007
Phone : 2387764, (R)6664541, 5309286

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Calcutta-700 007
Ph : Shop-242-4483/9181, (O) 238-1396/1871
Fax : 231-2151/666-6013

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta-700 001
Ph : 248-4730/6256/9867, Direct : 248-6477/6169
Resi : 478-0765/458-3397, Mobile : 98300-30618
Fax : 248-6169

JAICHAND VINODKUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Calcutta-700 007
Phone : 238-3328/9678, 239-3450
Resi : 247-6785/7086, 40-0325/3995
Fax : 239-3450, 247-7526
Telex : 217761 JVS-IN Gram MINNI-BROS

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D.C. Group Pvt. Ltd.
Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Calcutta-700 001
Phone : 220-4779/0131/5721

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

S. VIJAY CHAND
Vinay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Calcutta-700 007
Phone : Shop - 238-1388, (R) 247-6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Calcutta-700 007

LILY SUKHANI
7 Bright Appartment, Flat No- 7C
7 Bright Street, Calcutta - 700 019
Phone : 287 0448.

PARK PLACE HOTEL
'Singhi Villa'
49/2 Gariahat Road, Calcutta - 700 019
Phone : 475 9991/92/7632.

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Calcutta - 700 001
Phone : 2352076, 2355701

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED
Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Calcutta-700 071

Gram "GANGJUTMIL"
Fax : + 91-33-245-7591
Telex : 021-2101 GANG IN

Phone : 226-0881
226-0883
226-6283
226-6953

Mill :

BANSBERIA
Dist : HOOGHLY
Pin-712 502
Phone : 6346441/6446442
Fax : 6346287

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं ।

Shri Radha Krishnan

卐

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.

Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta - 700 017
Telegram : 'Hindogen' Calcutta
Phone : (033) 242-8399/8330/5443
Fax : (91) 33 2424998/4280

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
IronOre and Manganese Ore Mines
In Orissa
S. G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)
Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)
High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore
H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

जैन धर्म सर्वथा स्वतन्त्र धर्म है
यह किसी का अनुकरण नहीं है ।

Dr. Jacobi

卐

R. C. BOTHRA & COMPANY PVT. LTD

**Steams Agents, Handling Agents,
Commission Agents & Transport Contractors**

Regd. Office
2, Clive Ghát Street,, (N. C. Dutta Sarani)
Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No. 6, Phone : 220-6702, 220-6400
Fax : (91) (33) 220-9333

Vizag Office
28-2-47 Daspalla Centre
Vishakhapatnam - 530020, Phone : 569208/563276
Fax : 91-0891-569326, Gram : BOTHRA

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है ।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanksrit College, Calcutta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly : Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain- *Chairman*

A-42, Mayapuri, Phase-1, New Delhi-110064
Phone : 5144496, 5131086, 5132203
Fax : 91-011-5131184
E-mail : laxman.jariwala@gems.vsnl.net.in

"ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।"

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.

Anusandhan, Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia.

Manufactured By

M/s K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P.O. Azimganj, Pin - 742122
Dist : Murshidabad
Phone : Code : 03483 No. : 53232
Cal. Phone No. : 033 2300432, 5213863

With Best Compliments...

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven design time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer from 25 KVA to 50 MVA upto 132kv level.

Current Transformer upto 66kv.

Dry type Transformer.

Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, CALCUTTA - 700 016
PHONE : 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-2259484/2263236

मानव जीवन नश्वर हैं उसमें भी आयु तो बहुत ही परिमित है
एकमात्र मोंक्ष मार्ग ही अविचल है यह जानकर
काम भोगो से निवृत हो जाना चाहिए।

*

G.C. Jain

A-40 N.D. S.E-11
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

WB/RNP-45

~~WB/NC-339~~

Vol. XXIII No. 10 **TITTHAYARA** January 2000

Registered with the Registered of Newspapers for India
under No. 30181/77

कोहो पीइं पणासेइ, माणी विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो।।

क्रोध प्रीति का नाश करता है,
मान विनय का नाश करता है,
माया मित्रता का नाश करती है,
और लोभ सभी सद्‌गुणों का नाश कर देता है।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225